eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

संगीत और काव्य प्राचीन काल से आधुनिक काल तक

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0 जी0 पी0 जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

संगीत को यदि तीन भागों में विभक्त कर अध्ययन किया जाये तो प्राचीन मध्य, आधुनिक कालों में अन्तर यह होगा कि प्राचीन काल की सीमाएं अत्याधिक विस्तार में है और मध्य काल साहित्य और संगीत दोनों का स्वर्णिम काल है तथा आधुनिक काल अनुसंधानों का काल है। अतः प्राचीन काल को यदि ईशा के पूर्व से लिया जाये तो वह अति प्राचीन हो जायेगा। अतः यहाँ पर साहित्य के आदि काल के समयानुसार यदि संगीत में भी प्राचीन काल निर्धारित किया जाये तो निश्चित रूप से संगीत और साहित्य का इतिहास क्रमानुसार विकसित होता दिखाई पड़ेगा।

Keywords- संगीत, काव्य, प्राचीन काल, आधुनिक काल एवं मध्य काल साहित्य।

परिचय

वैदिक युग से मौर्य तथा जैन, बौद्ध धर्म तक के काल को संगीत का उत्तम काल अवश्य माना गया। तो भी साहित्य के उपलब्ध न होने के कारण उसकी समुचित व्याख्या करना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है इसलिए यदि प्राचीन काल की विशेषताओं का मूल्यांकन किया जाये तो इस काल में ध्रुपद जैसी क्लिस्ट एवं वैदिक साहित्य के अनुकूल गायन शैली का प्रार्दुभाव हुआ मानते है। ऐसा कहा जाता है कि तेरहवीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के द्वारा ध्रुपद का अविष्कार किया गया था किन्तु प्राचीन अन्य कई ग्रन्थों में ध्रुपद का उल्लेख 10वीं शताब्दी के पूर्व हो चुका था ऐसा मानते हैं। जो भी हो 1050 से लेकर 1375 के मध्य में ही ध्रुपद का अविष्कार हुआ। यहीं संगीत ग्रन्थों ने स्पष्ट किया है। ध्रुपद एक प्राचीनतम गायन शैली है। इसमें कोई सन्देह नहीं। प्राचीन काल के ध्रुपद में निम्नलिखित चार वाणिया तथा इस शैली के चार भाग होते थे –

चार वाणिया	चार भाग
नोहरी वाणी	स्थाई
खण्डहर वाणी	अन्तरा

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

डागुर वाणी	संचारी
गौड़ हरि वाणी	आभोग

प्राचीन काल का ध्रुपद संगीत के श्लोंको में श्वर, लय, ताल, बद्ध करते हुए परमात्मा की आराधना के लिए संत संगीतकार गाते थे। इसी काल में सरल संगीत के अन्तर्गत खम्सा, लाउनी, चतुरंग, तिखट गायन शैलियां का प्रयोग किया जाता था। सभी प्रकार की रचनाएं पद्य काव्य के अन्तर्गत प्रयुक्त होने के कारण संगीत और साहित्य का समन्वय पर्व की भांति इस काल में भी दृष्टिगत होता था और भावा–अभिव्यक्ति के लिए काव्य तथा संगीत का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होना इस काल की प्रमुख विशेषता थी।

प्राचीनकाल में राग शब्द की स्पष्ट रूप से उत्पत्ति नहीं हुयी थी अतः संगीत में प्रचलित तीन ग्राम, प्रड़ज, ग्राम, मध्यम, ग्राम, गंधार ग्राम का मार्गीय संगीत के लोप होने के साथ ही इस ग्राम का भी लोप हो चुका था और गंधार ग्राम के स्थान पर निशाद ग्राम प्रचार में आया और इन्हीं तीनों ग्रामों से उत्पन्न 7–7 मर्छनाएं संगीत गायन वादन में प्रयुक्त होने वाली स्वर क्रियाओं का आधार थी। इस काल में शान्ति रस तथा वीर रस और श्रृंगार रस का प्राधान्य था। इन्ही रसों के आधार पर निर्मित काव्य संगीत अभिव्यक्ति का माध्यम था किन्तु वह अपनी भैरव विसति क्षेत्र में न फैला सका। इस युग के साहित्यकार संगीतकारों की भांति उदार दृष्टि वाले नहीं थे। संगीतज्ञों के मस्तिष्क संकीर्ण होते जा रहे थे। वैदिक युग मे जो संगीत यज्ञों में फैल चुका था। अब व्यक्तिगत संर्कीणता में परिवर्तित हो गया था। नाट्य रास, जल क्रीडा आदि तत्कालीन जनता के लिए मनोविनोंद के साधन थे। नाटकों में स्त्री तथा पुरूष दोनों अभिनय करते थे। गायन का कार्य प्रायः स्त्री पात्रों द्वारा किया जाता था। अर्थात् इस काल में भले गायन का कार्य प्रायः स्त्री पात्रों द्वारा किया जाता था। अर्थात् इस काल में भले ही संगीत, नाटक–नौटंकी का साधन बन गया था तो भी इस प्रक्रिया में भी काव्य का स्थान था, क्योंकि जो भी गाया जाता था वह भी तो काव्य का ही अंश था। साहित्य चाहे उच्च कोटि का हो अथवा निम्न कोटि का अतः यह कहना समीचीन होगा कि काव्य और संगीत का समन्वय दृष्टिकोण इस काल में भी अनवरत रूप से प्रवाहित हो रहा था। इस प्रकार संगीत और साहित्य के अन्योनाश्रित होने का प्रमाण हमें प्राचीन काल से आधुनिक काल तक निरन्तर प्राप्त होगा। इस कथन में पूर्ण वास्तविकता पर आधारित सत्य प्राप्त होता है। संगीत और साहित्य की परिधि में उपरोक्त वर्णित स्थितियां प्राचीन काल की थी।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

(3) मध्य काल :

मध्य काल को निम्नलिखित दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। (1) पूर्व मध्य काल अथवा भक्ति काल, (2) उत्तर मध्य काल अथवा रीति काल।

जिस प्रकार से प्राचीन काल में ध्रुपद गायन शैली का प्रार्दुभाव हुआ उसी प्रकार से साहित्य के भक्ति काल में ख्याल, गायन शैली का जन्म हुआ। भक्ति काल में विभिन्न सन्त कवि भक्तों ने ईश्वर को आराध्य मानकर काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य और खण्ड काव्यों की रचना की। उनमें सूरदास की 'सूरसारावली', साहित्य–लहरी, सूरसागर। तुलसी दास जी की रामचरित मानस, कवितावली, दोहावली, विनय पत्रिका, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, वर्वय रामायण, रामलला नच्छहू। सन्त कबीर की साखी, सबद, रामायनी तथा निगुर्ण ब्रह्म के उपासक संत कवियों की पदावलियों में रस, छन्द अलंकार के अतिरिक्त उनमें गेय तत्व पूर्ण रूप से विद्यमान था। इसी काल में स्वामी हरिदास, उनके शिष्य गोपाल नायक, शारंगदेव, बैजू बावरा, तानसेन, जैसे महान संगीतज्ञों का आर्विभाव हुआ। इस काल के संगीत और साहित्य को जो गौरव प्राप्त हुआ इसी वस्तु परख स्थिति के कारण इस काल को संगीत और साहित्य के क्षेत्र में स्वर्ण युग कहा गया है। ख्याल गायन शैली के जन्म के साथ ही ध्रुपद गायन शैली में भी अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राचीन काल का ध्रुपद चार वाणियों से युक्त स्थाई, अन्तरा, संचारी, आभोग जैसे चार भागों में गाया जाता था। जबकि इस युग के उपरान्त ध्रुपद केवल दो भागों केवल स्थाई, अन्तरा में गाया जाने लगा। इसी काल में राग रागिनी पद्धति का प्रार्दुभाव हुआ। अतः स्वामी हरिदास के शिष्यों द्वारा जो स्वरचित पद्यों को स्वर, लय, ताल में निबद्ध कर गाया गया उसे संगीत और साहित्य के एक–दूसरे के पूरक होने का प्रमाण मिलता है। संगीत रत्नाकर में जो श्रुति और संगीत की परिभाषा की गयी उसे ही संगीत जगत में सर्वोपरि माना गया है। यथा गीतम्, वाद्यम् च नृत्यम् त्रय संगीत मुच्यते, नृत्य वादानुगम्, प्रोकतम् वाद्य गीतानु वर्तते, अर्थात गायन वादन, नृत्य इन तीनों कलाओं के समावेश को संगीत कहते है। जिसमें गायन के आधीन वादन तथा वादन के अधीन नृत्य होता है। संगीत रूपी मानव का स्वर, आत्मा, लय, अवयव और ताल संगीत रूपी मानव का शरीर है। दूसरे शब्दों में विभिनन स्वर समुदायों के सामंजस्य से उत्पन्न मधुन ध्वनि जिससे न कि केवल मनुष्य अपितु प्राणी मात्र के चित का रंजन करती है। उसे ही संगीत कहा है। संगीत के द्वारा ही काव्य की अनुभूति होती है, दूसरे शब्दों में काव्य के माध्यम से संगीत के स्वरों द्वारा भावा–अभिव्यक्ति होती है इसलिए काव्य और संगीत एक–दूसरे पर अन्योनाश्रित

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

है। इस सिद्धान्त का परिवर्तन किसी भी काल में नहीं हुआ। जिस प्रकार से पूर्व मध्यकाल यानि की भक्ति परिवर्तन किसी भी काल में नही हुआ। जिस प्रकार से पूर्व मध्य काल यानि कि भक्ति आन्दोलन साहित्य के क्षेत्र में स्वर्ण युग कहा गया ठीक उसी प्रकार से इस काल के मकान संत संगीतज्ञ ने जो संगीत के क्षेत्र में अनुसंधान किये वे काव्यानुकूल तो थे ही साथ ही संगीत के रसों से परिपूरित होने के कारण दोनों ही क्षेत्र स्वर्णिम युग के नाम से विभूषित हुए।

रीतिकालः

रीति काल को ही आधुनिक काल का पूर्वार्ध मानते हैं इस काल में संगीत में नृत्य, लोक नृत्य का बाहुल्य था। 17वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक रीति काल माना जा सकता है। इस काल में कवि बिहारी, देव, केशवदास आदि प्रमुख कवि श्रृंगार की रचनाओं में अद्वितीय थे अतः संगीत के क्षेत्र में राग, रागिनी, पद्धति का समापन और रागांग पद्धति का अल्प काल के लिए उदय इस काल की विशेषता रही है।

आधुनिक काल (रीति काल) :

आधुनिक काल (रीति काल):

आधुनिक काल संगीत तथा साहित्य के तात्विक ज्ञान तथा अनुसंधानों के लिए विशेष उल्लेखनीय है। इस तक राग–रागिनी पद्धति का पूर्ण ज्ञान रखने वाले संगीतज्ञ शेष नहीं रह गये थे। अतः संगीत को जीवित रखने के लिए पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे तथा पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने जो संगीत के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया। फलस्वरूप आज संगीत जीवित है और सम्पूर्ण भारत में संगीत का अस्तित्व कायम है इन दोनों विद्वानों ने तमाम पुराने तथा तत्कालीन कलाकारों को समारोह में आमंत्रित कर पर्दे के पीछे बैठकर अपने स्वर लिपियों के आधार पर सुने हुए गीतों को स्वरलिपि बद्ध किया। जिसके लिए भातखण्डे जी की 'क्रमिक मालिका' छः भागों मे लिखी और उसके ही आधार पर संगीत की शिक्षा आज भी जारी है। पलुष्कर जी के ग्रन्थ की लिपि कुछ किलिष्ट होने के कारण अधिक प्रचार में नहीं है, अब कवियों द्वारा रचित काव्य की नवीन अनुसंधानों के आधार पर स्वर और ताल लिपि बद्ध कर गाया व शिक्षक कार्य किया जा रहा है। कविवर सुमित्रा नन्दन पंत, जय शंकर प्रसाद, मैथिली शरण गुप्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', दिनकर, बच्चन आदि प्रमुख है जिनके पदों में गेय तत्व की सभी प्रवृत्तियां मौजूद है। जिनके माध्यम से इन कवियों की पद्य रचनाएं

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

संगीत गायन के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुयी है। अतः प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के काव्य और संगीत का अध्ययन करने के उपरान्त यह कहना अत्यन्त समीचीन होता कि न केवल संगीत और साहित्य एक–दूसरे के पूरक हैं अपितु भावा–अभिव्यक्ति में भी काव्य और संगीत एक–दूसरे पर पूर्ण रूप से अन्योनाश्रित है इसमें कोई भी संदेह नहीं है।